उस्ताद मौलाबक्ष द्वारा रचित ग्रंथ साहित्य एवम् उनका सांगीतिक योगदान : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

"Ustad Mawlabukhsh Dwara Rachit Granth Sahitya Aevam Unka Sangitik Yogdan :

Ek Vishleshnatmak Adhyayan"

फॅकल्टी ऑफ परफोर्मिंग आर्टस

दि महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी ऑफ बरोड़ा

पी.एच. डी. (संगीत) की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध सारांश

<u>शोधकर्ता – (**Researcher**)</u>

श्री विश्वास विजयकुमार संत

रजिस्ट्रेशन नं.**FOPA/47**   रजिस्ट्रेशन दिनांक-०६ दिसंबर २०१४

<u>मार्गदर्शक का नाम (**Guide)**</u>

डॉ. अहमदरझाखाँ सरवरखाँ पठाण

प्रोफेसर इन इन्स्ट्रुमेन्टल म्युझिक

डिपार्टमेंट ऑफ इन्स्ट्रुमेन्टल म्युझिक (सितार एवं वायोलिन)

फॅकल्टी ऑफ परफोर्मिंग आर्टस

दि महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी ऑफ बरोड़ा

२०१४-१५

प्रस्तावना

भारतीय शास्त्रीय संगीत,विश्व की सर्वाधिक,प्राचीन ऐतिहासिक,रमणीय,मधुर व रंजक परंपरा है। जिसने पुरे विश्व को अपनी ओर आकर्षित करते हुए इसे जानने,समझने व सिखने के लिये प्रेरित किया,साथ-साथ इस ऐतिहासिक परंपरा के साथ जुड़ने की लालसा भी उनके मन में उत्पन्न की है। संगीत कोई भी हो चाहे वह भारतीय हो या पाश्चात्य् उसमें गाये-बजाये जाने वाले स्वरों के माध्यम से उत्पन्न भाव उसका मुख्य आकर्षण है। तभी तो संगीत को विश्व कक्षा की भाषा या बोली समझी जाती है। यदि हम भारतीय संगीत की बात करें तो उसमें एक ऐसी ताकत तथा विशिष्टता है कि श्रोता चाहे भारतीय हो या पाश्चात्य् वह उसके मोह में अवश्य ही आ जाता है ।

जैसा की हम जानते है की संगीत का प्रयोजन मनोरंजनार्थ किया जाता है तथा यह परंपरा वेदकालीन या उससे भी प्राचीन मानी जाती है क्योंकि देवलोक में भी विभिन्न देवी-देवता अपने मनोरंजनार्थ “संगीत” का प्रयोग करते थे , जिसके प्रमाण हमें कई शास्त्रीय वेदों व धार्मिक पुस्तकों में मिलते है। देवी-देवताओं की यही परंपरा आगे चलकर राजा-महाराजा, बादशाहों व नवाबों ने भी कायम रखते हुए अपने मनोरंजनार्थ “संगीत” का प्राशन करते थे।

राजा-महाराजा और बादशाहों में ऐसे कुछ खास राजा-महाराजा व बादशाह हो गये जिनके सांगीतिक कार्यो के लिये उन्हें आजीवन याद रखा जायेगा जिनके कार्यो के कारण आज संगीत की नित-नवीन सांगीतिक पिढ़ी आकार ले रही है और उन्हीं के प्रयास से प्राचीन भारतीय शास्त्रीय संगीत आज अपने यौवन अवस्था में प्रस्थापित हो रहा है। जिसमें शास्त्रकार,साहित्यकार,कलाकार इत्यादिओं का महत्वपूर्ण व बहुमूल्य योगदान रहा है। जिनके अथक परिश्रम व कठोर तपस्या का फल है कि आज हम राग-रागिनीयाँ व शास्त्रीय साहित्य का अभ्यास इतनी गहराई से व आसानी से कर सकते है। शास्त्र में वर्णीत हमारी सांगीतिक धरोहर इन्हीं शास्त्रकारों,साहित्यकारों,कलाकारों की संपत्ति है ,

तभी तो इन शास्त्रों का अनुपालन करते हुवे हम अपनी प्रायोगिक व शास्त्रपक्ष को किसी भी स्तर के श्रोताओं को बड़ी ही आसानी से समझा सकते है। उन शास्त्रकारों और साहित्यकारों ने संगीत जैसी जटील विद्या को अपने ज्ञान, अनुभव व मेहनत से सीधा सरल बना दिया है। शास्त्र का अनुपालन करने वाली हमारी यह सांगीतिक धरोहर इसीलिए ही शास्त्रीय संगीत के नाम से जानी व पहचानी जाती है। इन शास्त्रों को जिन शास्त्रकारों,साहित्यकारों, ग्रंथकारों एंव कलाकारों ने अपनी अथक मेहनत से अलंकृत किया है ऐसे गुणीजनों के हम आजीवन ऋणी रहेंगे। इस परंपरा में पं.भरत, पं. शारंगदेव. पं.लोचन, पं.अहोबल, पं.श्रीनीवास इत्यादि नाम प्रचलित व उल्लेखनीय है, जिन्होंने अपनी महेनत, अनुभव व सांगीतिक तपस्या से कई बहुमूल्य साहित्य व शास्त्रों का निर्माण करते हुए हमारी प्राचीन सांगीतिक धरोहर को संजोए रखने में व सुरक्षित रखने में अपना बहुमूल्य एवम् अविस्मरणीय योगदान दिया है।

इसी परम्परा में जब हम आधुनिक काल के सांगीतिक शास्त्रकार, साहित्यकार, कलाकार,गुरू,वाग्गेयकार इत्यादि का स्मरण करते है, तो एक अविस्मरणीय छबि अनायस ही हमारे दृष्टि सन्मुख उपस्थित होती है, जिन्हें हम संगीतरत्न उ.मौलाबक्ष के नाम से पहचानते है। उ.मौलाबक्ष एक ऐसी विभूति हो गई, जिन्होंने न केवल संगीत कलाकार के रूप में अपना योगदान दिया है, बल्कि एक उत्तम वाग्गेयकार, व्यवस्थापक, गुरू, साहित्यकार तथा शास्त्रकार,के रूप में भी उनका बहुमूल्य योगदान रहा है। उनके इन विविध सांगीतिक पहलूओं में योगदान देखते हुए यदि उन्हें आधुनिक काल के सांगीतीक भिष्मपितामह् कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी । उ.मौलाबक्ष व बडौदा नरेश सयाजीराव ने मिलकर भारतीय शास्त्रीय संगीत के भविष्य को सुनहरा व सुरक्षित रखने हेतु गायन शाला की स्थापना की। उ.मौलाबक्ष ने समाज में संगीत का प्रचार-प्रसार किया व संगीत श्रोताओं को आजीवन संगीत सीखने,समझने का प्रयोजन करते हुए भारतीय शास्त्रीय संगीत को नवीन दिशा प्रदान की ऐसे महान कलाकार उ.मौलाबक्ष का

कार्य वंदनीय है। उ.मौलाबक्ष ने संगीत शिक्षण से संबधित विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला हुआ दिखाई देता है।

एक प्रतिभाशाली,कला-संपन्न,विविध भाषा सिध्ध,कलाकार उ.मौलाबक्ष ने संगीत की दुनिया में नवीनता की नींव रखते हुए भारतीय शास्त्रीय संगीत का भविष्य को सुनहरा व सुरक्षित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उ.मौलाबक्ष द्वारा स्थापित गायन शाला के स्थापना के १३२ वर्ष बितने के बाद भी जब इस अदभूत् कला के विषय में अपना संशोधन कार्य कर रहा हूँ तो इस विषय में आज भी नीत-नवीनता का आभास होता है । सर सयाजीराव गायकवाड की प्रेरणा एवं उस्ताद मौलाबक्ष के प्रयत्नों से प्रस्थापित इस ऐतिहासिक फेकल्टी ऑफ परफोर्मिंग आर्टस में से ही मैंने अपनी संगीत की अनुस्नातक की पदवी हाँसील की है तो इस विषय पर संशोधन करना मैं अपना कर्तव्य समझता हुँ तथा अपने आप को सौभाग्यशाली भी मानता हूँ। इस संशोधन कार्य से उ.मौलाबक्ष के कार्य तथा दुर्लभ एवं अति महत्वपूर्ण ग्रंथ- साहित्य से पुरे संगीत जगत को अवगत् करवाना ही इस संशोधन कार्य का मूख्य हेतु माना गया है।

आवश्यकता(**Need for the research on this Topic)**

प्रत्येक शोध-प्रबंध में प्रत्येक शोधकर्ता की मौलिकता दिखना अत्यावश्यक है और यहि प्रयास यहाँ पर किया जा रहा है। शोध-प्रबंध के प्रस्तुत विषय पर शायद ही काम किया गया है । बडैादा संस्थान पर विविध शोधकर्ताओं ने विविध द्रष्टिकोण से काम किया है परंतु मेरा मूख्य विषय उ.मौलाबक्ष के द्वारा रचित साहित्यिक ग्रंथ व सांगीतिक कार्यों से जुडा हुआ है तथा संभवतः इस विषय पर सुक्ष्म रूप से कोई शोध कार्य नहीं हुआ है तथा मौलाबक्ष एवं उनकी संगीत परंपरा में रचित, प्रकाशित ऐसे संगीत के कुछ दुर्लभ ग्रंथों व पुस्तकों का इस शोध-प्रबंध में पहलीबार प्रयोग किया गया है,जिससे उ.मौलाबक्ष के सांगीतिक कार्यो को अधिक गहराई से सिखने एवं समझने का प्रयास इस शोध प्रबंध के माध्यम से किया गया है।

उ.मौलाबक्ष ने जो विविध सांगीतिक कार्य किये है वह कार्य भारतीय संगीत प्रणाली की नींव या स्थंभ माने जाते है तथा इनके द्वारा किये गये कार्यों से भारतीय संगीत में कुछ ऐतिहासिक व मूल्यवान कार्य हुए है, जिन्हें संगीत शिक्षार्थी, संगीत प्रेमी इत्यादी को अवगत् करवाना मैं अपना कर्तव्य समझता हुँ ।

संबंधित विषय में प्रस्तुत जानकारी,पुस्तकें,ग्रंथो को प्रबंध के माध्यम से लिखीत व आधुनिक रूप में कोम्पेक्ट डिस्क के रूप में जतन न किया गया तो यह दुर्लभ जानकारी, ग्रंथ, पुस्तकें व मौखिक जानकारी ईत्यादि लुप्त होने की संभावना है । इसलिये ऐसी गंभीर परिस्थिति को रोकने में इस प्रबंध की अवश्य ही महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी यह मेरा “विश्वास” है । प्रस्तुत शोध-प्रबंध उ.मौलाबक्ष के द्वारा रचित साहित्यिक ग्रंथ, सांगीतिक कार्यो को स्पष्ट करने में अवश्यही महत्वपूर्ण साबित होंगा। जिससे संगीत की आनेवाली पीढ़ी को शतक पूर्व की सांगीतिक परिस्थितियों को जानने ,सिखनेका व समझनेका अवसर प्रदान होगा तदुपरांत उ.मौलबक्ष के समय की रचनाएँ ,स्वरलिपि, तालपद्धति , रागस्वरूप इत्यादी की महत्वपूर्ण जानकारी अवश्य ही प्राप्त होंगी यह मेरा “विश्वास” है।

परिकल्पना (**Hypothesis**)

भारतीय संस्कृती कि प्राचीन रमणीय व रंजक संगीत परंपरा यह विश्व कि एक अद्भूत व संमोहित करने वाली तथा आकर्षित करने वाली कला है जिसके अंतर्गत गायन-वादन व नृत्य का समावेश होता है । भावनाओं से जुडी इन कलाओं में हमारे शास्त्रकारों, ग्रंथकारों एवं विद्वानों ने विभिन्न दृष्टिकोण से अपना योगदान दिया है। इसी परंपरा में जब हम शास्त्रकारों या ग्रंथकारों के योगदान के विषय में चर्चा करते है तब एक अद्भूत शास्त्रकार, ग्रंथकार, कलाकार ऐसे विद्वान उ. मौलाबक्ष कि छबि हमारे संन्मुख उपस्थित हो जाति है। इनके अद्वितिय सांगीतिक योगदान ने विभिन्न शास्त्रकारों,ग्रंथकारों के लिए प्रेरणा स्थान के रूप में अपना योगदान दिया है। ऐसे संगीत के युगद्रष्टा के विषय में व उनके द्वारा रचित,संपादित या लिखित ग्रंथों व साहित्यों का विश्लेष्णात्मक अध्ययन करना न केलव मेरे लिए परंतु संपूर्ण संगीत समाज के सौभाग्य की बात है।

माहिती एकत्रित करने की विधि (**Data collection methodology**)

१- विविध विद्वानों द्वारा प्रस्तुत शोध विषय पर लिखित प्रकाशित एवम् अप्रकाशित लेख शोध-प्रबंध, शोध-पत्र, सांगीतिक ग्रंथो इत्यादीओं को विभिन्न पुस्तकालयों में खोज कर एवम् अध्ययन करके संम्बन्धीत विषय में माहितियाँ एकत्रित की गई है।

२- यह एक दुर्लभ विषय होने से इसमें मौखिक परंपरा द्वारा भी जानकारी प्राप्त कि गई है ।

३- शोध विषय के संदर्भ में विषय से संबधित पारिवारिक सदस्यों,ऐतिहासिक स्थल, साहित्यकारों तथा स्थानिक वरिष्ठ कलाकारों की प्रत्यक्ष मुलाकात लेकर विभिन्न माहितियाँ एकत्रित की गई है।

४- आधुनिकता के समय में सूचना प्रौद्योगिकी व इंटरनेट जैसे विविध विद्युत उपकरणों का प्रयोग करके संम्बन्धीत विषय में माहितियाँ एकत्रित की गई है।

साहित्य की समीक्षा (**Review of Literature**)

प्रस्तुत विषय के संम्बध में विविध माहिती ,विविध स्थलों, पुस्तकालयों से व मौखिक परंपराओ से एकत्रित करते हुए प्राप्त माहितीओं को विभिन्न शास्त्रकारों, ग्रंथकारों, विद्वानों व संबधित विषय के ज्ञाताओं द्वारा जाँचा व परखा गया है। अन्य शोधकर्ता द्वारा किए गये कार्यों की भी समीक्षा की गई है ।अनुसंधान के लिए प्रासंगिक और सही माहितीयों को ही स्थान दिया गया है और अनावश्यक, अवांछित माहिती को त्याग दिया गया है ।

*उद्देश्य (**Purpose**)*

भारतीय संगीत परंपरा में जब हम उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत या कर्णाटकीय शास्त्रीय संगीत का विचार करते है तब इन दोनों परंपराओं के आगे हम शास्त्रीय संगीत का भी उल्लेख करते है। शास्त्रीय संगीत का अर्थ हमारे भारतीय सांगीतिक शास्त्रकारों, ग्रंथकारों, साहित्यकारों व सांगीतिक विभिन्न विद्वानोंने जिस राग - रागिनीयों का व शास्त्रों का प्राचीन ग्रंथो में उल्लेख किया है, उसी निती नियम व शास्त्रों अनुसरन करते हुए हम अपनी सांगीतिक कलाओं का प्रस्तुतिकरण करते है ।इस दृष्टिकोण से हमें यह ज्ञात होता है कि इस परंपरा में ग्रंथों,साहित्यों का योगदान कितना अमूल्य है जिसके लिए हमें उन प्राचीन व अर्वाचिन शास्त्रकारों, ग्रंथकारों, साहित्यकारों एवं इतिहासकारों, कलाकारों का आभार व्यक्त करना चाहिए जिन्होंने न केवल पुरे विश्व की व ब्रम्हांड को एक अलौकिक संगीत कला को हम तक पहुचाँने में व इसे जिवित रखने में अपना जीवन समर्पित किया है। ऐसे हि एक अद्भूत विभूति के रूप में उ. मौलाबक्ष का कार्य भी अविस्मरणीय रहा है। ऐसे हि अद्भूत विलक्षणीय कलाकार उ. मौलाबक्ष के द्वारा रचित विभिन्न दुर्लभ,अमूल्य ग्रंथो को व उनके सांगीतिक कार्यों को प्रस्तुत शोध-प्रबंध के माध्यम से आधुनिक व सांगीतिक पिढ़ी को अवगत् करवाना इस का उदेश्य माना गया है।

शोध प्रक्रिया (**Research Methodology and Planning)**

१) प्रस्तुत शोध-प्रबंध का विषय बड़ौदा से संबधित होने से बडौदा के मान्यवर व शोध-प्रबंध के विषय से परिचित कलागुरू, कलाप्रेमी, श्रोताओं से इस शोध विषय से संबधित प्रामाणिक जानकारी व्यक्तिगत साक्षात्कार, वार्तालाप इत्यादि के द्वारा जानकारी ली गई है ।

२) तदुंपरांत विविध ग्रंथालयों का भ्रमण व अभ्यास करके विविध पुस्तकों व ग्रंथों की सहायता से संबधित विषय में जानकारी एकत्रित की गई है ।

३) संबधित विषय में मौखिक परंपरा ही अधिक पाई जाती है तदुंपरांत सूचना और प्रौद्योगिकी तथा विद्युतीकरण के जमाने में संपूर्ण विश्व काफी छोटा और सीमित हो गया है। इन्टंरनेट एंव विद्युतीकरण उपकरणों द्वारा विश्वभर में उपलब्ध ध्वनिमुद्रण व अनेक प्रकार की जानकारीयाँ प्राप्त करने हेतु एक सशक्त साधन है, अतः ऐसे साधनों का विशेष उपयोग किया गया है। शतक पूर्व उ.मौलाबक्ष द्वारा रचित दुर्लभ ग्रंथो को खोजने का प्रयास किया गया है ।

४) प्रस्तुत शोध-प्रबंध उ.मौलाबक्ष से संबधित होने से प्रस्तुत विषय के संदर्भ में उ.मौलाबक्ष के परिवार से प्रत्यक्ष मुलाकात करके संदर्भ विषय में जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न किया गया है।

<u>शोध कार्य कि सीमा (**Limitation of research**)</u>

प्रथम प्रकरण में उपलब्ध इतिहास के माध्यम से महाराजा आनंदराव गायकवाड़ (सन् १८००) से सयाजीराव गायकवाड़ तिसरे कि समयावधि में बड़ौदा कि सांगीतिक परंपरा का संक्षिप्त में अध्ययन किया गया है ।

द्वितीय प्रकरण में महाराजा सयाजीराव गायकवाड तृतिय और कलाकार मौलाबक्ष ने बडौदा को संगीत के क्षेत्र में विश्वव्यापी बनाने में अपना ऐतिहासिक योगदान प्रदान किया है । मौलाबक्ष द्वारा सामूहिक शिक्षा आधारित गायन शाला का निर्माण ,अभ्यास लक्षी ग्रंथ साहित्य का प्रकाशन,परिक्षा एवम् मूल्यांकन पध्धति ,महिला संगीत शिक्षा ईत्यादी महत्वपूर्ण योगदानों का विवरण दिया गया है ।

तिसरे प्रकरण में हम मुख्य रुप से उ.मौलाबक्ष द्वारा निर्मित स्वरलिपि के विषय में चर्चा करते हुए स्वरलिपि के विभिन्न पहलुओं पर भी प्रकाश डाला गया है । उ.मौलाबक्ष जी कि स्वरलिपि की तुलना पं. भातखंडे जी व पं.पलुस्कर जी कि स्वरलिपि से करते हुए उनके भेद बताये गये है ।

शतक पूर्व रचित इन दुर्लभ सांगीतिक ग्रंथो/पुस्तकों को खोजा गया है ,तथा शोध प्रबंध के इस अंतिम चरण में अर्थात् प्रकरण-४ में प्रो.मौलाबक्ष द्वारा रचित प्रथम पुस्तक “संगीतानुभव” व संगीत शाळाओं में चलाए जाने वाली गायनों की चीजों के छह क्रमिक पुस्तकों के सांगीतिक रचनाओं के राग ,ताल,रचना के संदर्भ में संक्षिप्त में विश्लेषण किया गया है । इन सातों पुस्तकों की सूची निम्न प्रकार से है ।

ग्रंथकार के रूप में उ.मौलाबक्ष द्वारा रचित निम्न लिखीत सात (७) पुस्तकों का संक्षिप्त विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

१ .संगीतानुभव

२. गायन शाळाओं में चलाए जाने वाली गायनों की चीजों का भाग-१

३. गायन शाळाओं में चलाए जाने वाली गायनों की चीजों का भाग-२

४. गायन शाळाओं में चलाए जाने वाली गायनों की चीजों का भाग-३

५. गायन शाळाओं में चलाए जाने वाली गायनों की चीजों का भाग-४

६. गायन शाळाओं में चलाए जाने वाली गायनों की चीजों का भाग-५

७. गायन शाळाओं में चलाए जाने वाली गायनों की चीजों का भाग-६

संशोधन कार्य की रूपरेखा

उस्ताद मौलाबक्ष द्वारा रचित ग्रंथ साहित्य एवम् उनका सांगीतिक योगदान : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रकरण : १. बड़ौदा कि सांगीतिक परंपरा- एक संक्षिप्त अभ्यास

बडौदा के सांगीतिक इतिहास का अभ्यास करने से यह विदित होता है,कि उस्ताद मौलाबक्ष ने अपने जीवन का सर्वाधिक व अमूल्य समय बडौदा में ही व्यतीत किया था । मौलाबक्ष ने बडौदा के लगातार तीन शासक १.खंडेराव गायकवाड (शासनकाल १८५७-१८७०),मल्हारराव गायकवाड (शासनकाल १८७०-१८७५) और सयाजीराव गायकवाड (शासनकाल १८८१-१९३९) के कार्यकाल में अपनी सांगीतिक सेवाएँ प्रदान की थी । विशेष रूप से इन तीनों शासकों के शासन काल के दरम्यान शास्त्रीय संगीत को बडौदा में काफी मान सम्मान प्राप्त हुआ । संगीत एवं नृत्य के शोखीन इन गायकवाड शासकों ने देश के कई प्रतिष्ठित कलाकारों को अपने दरबार में आमंत्रित किया था । उनके इसी प्रोत्साहन के फलस्वरूप आज बडौदा एवं देश में शास्त्रीय संगीत पुनः अपने सर्वोच्च स्थान पर बिराजमान होने में सफल हुआ है ।

सयाजीराव तिसरे के पूर्व गायकवाड़ महाराजाओ ने संगीत के महत्व को समझते हुवे संगीत को अपने दरबार में स्थान अवश्य दिया था परंतु उस समय कि विपरित परिस्थीतीओं के कारण संगीत एक सिमीत दायरे में बंध चुका था । युगद्रष्टा सयाजीराव गायकवाड़ तिसरे के शासन काल में उनके प्रयत्नो एवं प्रोत्साहन के परिणाम स्वरूप बड़ौदा में संगीत ने असीम उँचाईयो को छु लिया था । "कलावंत कारखाने" को आधुनिक एवं सुव्यवस्थित बनाने का प्रयत्न, विभिन्न विधाओ के संगीत कलाकारों को राज्याश्रय, संगीत शिक्षा, समाज में संगीत का प्रचार-प्रसार इत्यादि क्षेत्रो में सयाजीराव द्वारा किए गए कार्यो कि संक्षिप्त माहिती देने का प्रयत्न इस प्रकरण के अंतर्गत किया गया है ।इस प्रकरण में १८७५ से १९५० तक बड़ौदा में संगीत के उत्थान एवं उसके विकास गाथा कि चर्चा कि गई है ।

प्रकरण : २. उ.मौलाबक्ष का परिचय एवम् सांगीतिक योगदान

१९ शताब्दि के पूर्वाध में भारतीय शास्त्रीय संगीत मुश्किल परिस्थिती से गुजर रहा था। मुगल एवं अंग्रेजो के शासन काल में हमारे भारतीय संगीत में कई परिवर्तन हुए। वैसे भी संगीत एक परिवर्तनशील कला है; जिस प्रकार मानव का शारीरिक एवं बौध्धिक विकास होता गया वैसे-वैसे संगीत का स्वरूप भी बदलता गया। भारत देश पर बार-बार होने वाले विदेशी आक्रमण एवं उनके शासन काल में बाहरी संस्कृती, सभ्यता, भाषा एवं कलाओं का भी भारतीय संगीत पर गहरा प्रभाव दृष्टीगोचर होता है।

भारतीय संगीत में मुस्लीम कलाकारों की बढ़ती संख्या, संगीत में बढ़ती श्रृंगारीकता और अंग्रेजों का सहयोग एवं प्रोत्साहन न मिलने से भारतीय राग संगीत का अस्तीत्व बनाये रखना अत्यंत मुश्कील था।

१९ वीं सदी के दरम्यान ब्रिटिशर्स दुनियाभर में भारतीय संगीत के विषय में करते थे की भारतीय संगीत आदिम और प्राथमिक कक्षा का संगीत है, जिसमें संगीत शिक्षा का कोई नियमीत एवं सर्व मान्य ढाँचा नही है और ना ही उसमें स्वरलिपी है। ब्रिटिशर्स का भारतीय संगीत के प्रति यह मत था की प्रशिष्ट संगीत कुछ ही लोगों के लिए सिमित है। उपयुक्त कुछ प्रमुख कारणों की वजह से अंग्रेज भारतीय राग संगीत को अविकसीत और अवैज्ञानिक मानते हुवे उसकी अवहेलना करते थे। इन विपरित परिस्थितीयों में भी मौलाबक्ष ने अथक परिश्रम करके भारतीय शास्त्रीय संगीत शिक्षा को आधुनिक एवं वैज्ञानिक बनाते हुए इसे संपूर्ण स्वरूप प्रदान किया। भारतीय शास्त्रीय संगीत को न केवल राष्ट्रीय-अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा दिलाई परंतु उसकी एक सुव्यवस्थित संगीत शिक्षा प्रणाली को स्थापित करके मौलाबक्ष ने इस प्राचीन भारतीय विद्या को अमरत्व प्रदान किया।

ऐसे प्रखर विद्वान, युगद्रष्टा , संगीतज्ञ मौलाबक्ष के सांगीतीक जिवन व योगदान का अभ्यास करना अनिवार्य होने से उनकी पारीवारिक पृष्ठभूमी , संगीत शिक्षा

, संगीत यात्रा व उनके विविध सांगीतीक योगदान व विभिन्न एतिहासीक पहलुओं जैसे की गायनशाला का निर्माण,गायन-वादन की आधुनिक शिक्षा प्रणाली, महिला संगीत शिक्षा इत्यादी विषयों की चर्चा इस प्रकरण के अंतर्गत की गई है।

एक बहुमुखी प्रतिभा संपन्न उ.मौलाबक्ष एक मूर्धन्य कलाकार; निःस्वार्थ भाव से विद्या दान के लिए तत्पर आदर्श गुरू, विशिष्ट सर्जनशील प्रतिभा पूर्ण संगीत रचनाकार, गायनशाला के प्रधानाचार्य, कलावंत कारखाने के अधिक्षक, उत्तम गायक तथा वादक आदि के रूप में उ.मौलाबक्ष ने अभुतपूर्व ख्याति अर्जित कि है जिसका संक्षिप्त में अध्ययन किया गया है ।

प्रकरण : ३.

स्वरलिपि

"स्वरलिपि" यह आज संगीत की न केवल आवश्यकता है परंतु स्वरलिपि और संगीत यह दोनों एक ही सिक्के की दो पहलू बन चूके है । "स्वरलिपि" आज संगीत के लिए न केवल प्रारंभिक विधार्थी परंतु सभी स्तर के विद्यार्थी, कलाकार ,अभ्यासार्थी, शोधार्थी के लिये एक आशीर्वाद स्वरूप है । "स्वरलिपि" का अभ्यास व शोध का एक रोचक विषय भी बना हुआ है । "स्वरलिपि" ने ही हमें हमारी प्राचीन संगीत संस्कृति को लुप्तप्रायः होने से बचाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है तथा हमें हमारी प्राचीन संस्कृति को सिखने,समझने का एक अमूल्य अवसर भी प्रदान किया है ।

अतः इस प्रकरण में हम मुख्य रुप से उ. मौलाबक्ष द्वारा निर्मित स्वरलिपि के विषय में चर्चा करते हुए स्वरलिपि के विभिन्न पहलुओं पर भी प्रकाश डाला गया है । उ.मौलाबक्ष जी कि स्वरलिपि की तुलना पं. भातखंडे जी व पं.पलुस्कर जी कि स्वरलिपि से करते हुए उनके भेद बताये गये है।

प्रकरण : ४.

उ.मौलाबक्ष द्वारा रचित ग्रंथ-साहित्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

शोध प्रबंध के इस अंतिम चरण में अर्थात् प्रकरण-४ में प्रो.मौलाबक्ष द्वारा रचित प्रथम पुस्तक "संगीतानुभव" व संगीत शाळाओं में चलाए जाने वाली गायनो की चीजों के छह क्रमिक पुस्तकों के सांगीतिक रचनाओं के राग ,ताल,रचना के संदर्भ में संक्षिप्त में विश्लेषण किया गया है । श्रीमंत सरकार सयाजीराव महाराजा साहब के आर्शिवाद व प्रोत्साहन से व प्रो.मौलाबक्ष द्वारा उनके ही स्वरलिपि में रचित व प्रकाशित साँतो पुस्तकें महत्वपूर्ण व बहुमुल्य है। इन सातों पुस्तकों की सूची निम्न प्रकार से है ।

पुस्तको की सूची

१. संगीतानुभव

२. गायन शाळाओं में चलाए जाने वाली गायनों की चीजों का भाग-१

३. गायन शाळाओं में चलाए जाने वाली गायनों की चीजों का भाग-२

४. गायन शाळाओं में चलाए जाने वाली गायनों की चीजों का भाग-३

५. गायन शाळाओं में चलाए जाने वाली गायनों की चीजों का भाग-४

६. गायन शाळाओं में चलाए जाने वाली गायनों की चीजों का भाग-५

७. गायन शाळाओं में चलाए जाने वाली गायनों की चीजों का भाग-६

उपसंहार(**Conclusion**)

इस शोध प्रबंध में प्रस्तुत जानकारी काफी उपयोगी,महत्वपूर्ण व अमूल्य है। इस प्रबंध का उददेश्य् केवल महाविद्यालय की उच्चतर उपाधि हॉसिल करना नहीं है परंतु उ. मौलाबक्ष के सांगीतिक कार्यो को संगीत समाज के समक्ष रखते हुए उनके कार्यों को साहित्य के रूप में जतन करना भी है।

वर्तमान समय कि संस्था महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी की फॅकल्टी ऑफ परफोर्मिग आर्टस के नाम से प्रसिध्ध है । यह संस्था महाराजा सयाजीराव गायकवाड व उ. मौलाबक्ष की अमूल्य देन है । इस संस्था में बड़ौदा के अलावा दूर-दूर के गाँव-शहेरों व देश-विदेश से विद्यार्थी यहाँ अभ्यास हेतु आते है। इस विद्या का प्रचार-प्रसार होता हुआ देखकर मैं ईश्वर का , श्रीमंत महाराजा सयाजीराव व उ. मौलाबक्ष आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस लुप्त होती हुई विद्या को पुर्नजिवन देते हुए उसके भविष्य को सुरक्षित व उज्वल कर दिया है।

उ.मौलाबक्ष का योगदान अविस्मरणीय है तो उनके जैसी विभूतियों द्वारा रचित अमूल्य ग्रंथो को विभिन्न विद्युत उपकरणों के माध्यम से जतन करके आनेवाली सांगीतिक पीढ़ी को सुरक्षित रूप में पहुँचाना ही इस शोध-प्रबंध का मुख्य हेतु है।

भारतीय संगीत शिक्षा को आधुनिक व वैज्ञानिक बनाने के लिये, सामूहिक शिक्षा आधारित गायन शाला का निर्माण,अभ्यास लक्षी ग्रंथ साहित्य का प्रकाशन , परिक्षा एवम् मूल्यांकन पध्धति , महिला संगीत शिक्षा, व सबसे महत्वपूर्ण भारतीय संगीत के लिये उपयुक्त एक स्वदेशी स्वरलिपि का आविष्कार करने का श्रेय मौलाबक्ष को ही प्रदान किया जाता है ।

अधिकांश इतिहासकारों ने मौलाबक्ष को भारतीय संगीत का ″बिथोवेन″ माना है। भारतीय संगीत शिक्षा को उच्च शिखर पर प्रस्थापित करने के लिये मौलाबक्ष को ″निव का पत्थर″ और ″सांगितिक अवतार″ जैसे उपाधि से भी सन्मानित किया गया है ।

दीनांक : -९-२०१८

स्थल : फॅकल्टी ऑफ परफोर्मिग आर्टस्,

दि महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी ऑफ बरोडा